# भाषा की परिभाषा एवं अभिलक्षण

डॉ० जिंदर सिंह मुण्डा
विभागाध्यक्ष, हिन्दी
डीएसपीएमयू, राँची

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, समाज में रहने के नाते उसे दैनिक-जीवन में सर्वदा ही विचार-विनिमय करना पड़ता है। कभी शब्दों, वाक्यों, सिर हिलाकर, समाज को संपन्न व्यक्ति निमंत्रण-पत्र तो निम्न व्यक्ति हल्दी-सुपारी (छ) इलायची बाँटकर, रेलवे गार्ड झंडी दिखाकर, चोर छूकर या दबाकर, करतल ध्वनि, आँख टेढ़ी करना, मारना, दबाना, खाँसना, गहरी साँस लेना। आशय है- गंध इंद्रिय, स्वाद इंद्रिय, स्पर्श इंद्रिय, दृग इंद्रिय तथा कर्ण इंद्रिय। गंध इंद्रिय एवं स्वाद इंद्रिय का प्रयोग कम एवं दृग इंद्रिय का प्रयोग अधिक होता है। कर्ण इंद्रिय का भी प्रयोग होता है। वक्ता बोलता है, श्रोता सुनकर विचार-भाव ग्रहण करता है।

भाषा मनुष्य की उस प्रवृत्ति का परिणाम है जिसके तहत मनुष्य अपने-आप को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करना चाहता है, व्यक्ति अभिव्यक्ति चाहता है, अपनी बात जहाँ वह दूसरे से कहना चाहता है वहीं दूसरों के विचारों को भी ग्रहण करना चाहता है आत्माभिव्यक्ति की यही इच्छा भाषा को जन्म देती है। आम तौर पर भाषा के माध्यम से उस माध्यम का बोध होता है; जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को प्रकट करता है; या वे सभी प्रकार के साधन जिसके द्वारा मनुष्य विचार विनिमय करता है, मोटे तौर पर भाषा कही जाती है; इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भाषा विचार विनिमय का साधन है।

भाषा का व्यापक अर्थ :- भाषा के इस व्यापक अर्थ में वे सभी माध्यम आ जाएँगे, जिनके द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करता है, अर्थात् विस्तृत दृष्टि से भाषा जीवित प्राणी के संवेदनात्मक, भावात्मक एवं ऐच्छिक अनुभूति की अभिव्यक्ति है। इन माध्यमों को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है:-

(i) नेत्र ग्राह्य (ii) स्पर्श ग्राह्य (iii) श्रवण ग्राह्य



P.T.O.

Scanned with Cam

(i) नेत्र ग्राह्य :- नेत्र ग्राह्य के अंतर्गत वे साधन आते हैं जिनके द्वारा विचार-विनिमय करते समय मनुष्य को नेत्रों के सहारे संकेतों को ग्रहण करना पड़ता है। इन संकेतों के द्वारा एक मनुष्य दूसरे तक अपनी बात पहुँचा देता है। जैसे- रेलवे गार्ड की हरी झंडी गाड़ी के चलने अथवा रुकने का संकेत देना फिर आँख चलाकर किसी को बुलाना या संकेत देना, ट्रैफिक सिग्नल की लाल अथवा हरी बत्ती भी रुकने अथवा चलने का संकेत हैं। ये सभी विचार-विनिमय नेत्र ग्राह्य के साधन हैं।

(ii) स्पर्श ग्राह्य :- स्पर्श ग्राह्य के अंतर्गत वे साधन आते हैं जिनके द्वारा मनुष्य विचार विनिमय करते समय स्पर्श का सहारा लेता है।
जैसे :- पुलिस का खतरा होने पर एक चोर दूसरे चोर का हाथ दबाकर खतरे का संकेत देता है। इस प्रकार स्पर्श कर दो के आपस में अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

(iii) श्रावण ग्राह्य :- श्रावण ग्राह्य के अंतर्गत वे समस्त ध्वनियाँ आती हैं जिनके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को व्यक्त करता है।
जैसे- चुटकी या सीटी बजाकर किसी को बुलाना या डाकघर के तार बाबू को एक खास प्रकार की ध्वनि के द्वारा किसी संदेश को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजना विचार-विनिमय के श्रावण ग्राह्य साधन हैं।

भाषा के सीमित अर्थ :- व्यापक अर्थ के अंतर्गत आत्माभिव्यक्ति के जितने भी साधनों की बात की जाती है (जो भाषा वैज्ञानिक अर्थ की दृष्टि से उपयुक्त नहीं है) यदि इन सबको भाषा मान लिया जाए तो इसके अर्थ अति व्याप्ति हो जाती है; जो भाषा के वैज्ञानिक अर्थ की दृष्टि से उपयुक्त नहीं है, वस्तुतः भाषा का एक सीमित अर्थ है जो इसको वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करता है। सीमित अर्थ के अंतर्गत भाषा भाषा मनुष्यों के कंठोत्पन्न ध्वनि प्रतीकों या वाक् प्रतीकों का समुच्चय है जो श्रोता तक पहुँच कर एक निश्चित अर्थ प्रदान करता है।

Scanned with Cam

सीमित अर्थ में इसकी प्रवृत्तियाँ :- भाषा

(i) भाषा विचार विनिमय का साधन है, भाषा उच्चारण अवयवों से निकले हुए ध्वनि प्रतीकों का समूह है।

(ii) भाषा के सार्थक ध्वनि प्रतीक विश्लेषण योग्य होते हैं।

(iii) भाषा की आधारभूत विशेषता उसकी प्रतीकात्मक संरचना है मानव द्वारा प्रयुक्त भाषा की ये विशेषता अत्यंत महत्वपूर्ण है। यही इसे पशुओं से भिन्न करती है। भाषा की प्रतीकात्मकता में आवश्यक रूप से दो तत्व विद्यमान रहते हैं इसके प्रतीक का तो एक रूप रूप होता है किंतु उसके द्वारा ज्योतित वस्तु का अन्य अर्थ एवं रूप है। इस प्रकार भाषा के रूप एवं अर्थ में घनिष्ठ साहचर्य होता है। यह इसी प्रकार के कुट अर्थ की भांति होता है जिस प्रकार सड़क को लाल एवं हरी झण्डी का होता है।

(iv) भाषा के ध्वनि प्रतीकों का रूप यादृच्छिक होता है। जब हम पक्षियों के कलरव और पशुओं के चिंघाड़ चिंकार की तुलना मानव भाषा से करते हैं तो इन दोनों में जो अंतर स्पष्टतया ज्ञात होता है कि मानव भाषा सर्वथा यादृच्छिक है, वास्तव में मनुष्य जिन शब्दों को उच्चरित करता है उनमें तथा उनके द्वारा घोतित वस्तुओं में कोई समवाय संबंध नहीं होता। जैसे- हम जब गाय शब्द का उच्चारण करते हैं तो इसमें - ग+आ+य+अ इन ध्वनि प्रतीकों का प्रयोग होता है, किंतु इन ध्वनि प्रतीकों के द्वारा दूध देने वाली चार पैरों वाली किसी पशु का कोई संबंध नहीं होता परंतु गाय शब्द से किसी खास पशु का बोध पूरे विश्व में एक विशेष भाषा समुदाय के लिए होता है।

(v) प्रत्येक भाषा में उच्चरित ध्वनि प्रतीकों की एक व्यवस्था होती है जो उसे वास्तविक रूप प्रदान करती है, यह व्यवस्था ही भाषा-विज्ञान को सामाजिक विज्ञानों में वास्तविक विज्ञान के रूप में पुनिस्थापित करती है। इस सुव्यवस्था का ही परिणाम है कि कोई भाषा किसी मानव समुदाय द्वारा अभिव्यक्ति के लिए सुदीर्घ काल तक प्रयुक्त होती है। भाषा में सदैव परिवर्तन होता रहता है और यह मनुष्य की



Scanned with Cam

परिवर्तित आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए आवश्यक है।

(v) भाषा का प्रयोग समाज का एक वर्ग-विशेष करता है इससे सामाजिक स्तर का पता लगता है।

भाषा की परिभाषा:— " मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और (मति) मति का आदान-प्रदान करने के लिए जिन ध्वनि संकेतों का व्यवहार होता है उसे भाषा कहते हैं।"

— डॉ० श्यामसुंदर दास

• "भाषा एक ध्वनि चिह्न है, जिनके द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करता है।" — डॉ० बाबूराम सक्सेना

• "मनुष्य के उस व्यापार को भाषा मानते हैं जिसके द्वारा उच्चारणोपयोगी शरीर अवयवों से उच्चारण किए गए वर्णों या व्यक्त शब्दों से अपने विचार को प्रकट किया जाता है।" — डॉ० मंगलदेव शास्त्री

• " भाषा वह साधन है, जिसके माध्यम से हम सोचते हैं तथा विचारों और भावों को व्यक्त करते हैं।" — डॉ० भोलानाथ तिवारी

• " उच्चरित ध्वनि संकेतों की सहायता से भाव या अभिव्यक्ति की पूर्ण अभिव्यक्ति ही भाषा कहलाती है।" — डॉ० देवेन्द्र नाथ शर्मा

• भाषा को मनुष्य समाज में व्यवहृत ऐसी ध्वनियों के रूप में मान्यता प्रदान की जो विचारों को समझने में सहयोग देती है।" — ब्लूम फील्ड

• "A Laguage is a System of arbitrary vocal symbols by means of which a Society group cooperates." — Block & Trager

- भाषा मानव उच्चारणावयवों से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की वह संरचनात्मक व्यवस्था है, जिसके द्वारा समाज विशेष के लोग आपस में विचार-विनिमय करते हैं, लेखक, कवि या वक्ता रूप में अपने अनुभवों एवं भावों आदि को व्यक्त करते हैं तथा अपने वैयक्तिक और सामाजिक व्यक्तित्व, विशिष्टता तथा अभिन्नता के संबंध में जाने-अनजाने जानकारी देते हैं।



Scanned with Cam